श्रीलाल शुक्ल के कथा साहित्य में सामाजिक एवं राजनीतिक व्यंग्य

कैलाश नाथ यादव,
शोधार्थी,
विश्वविद्यालय,लखनऊ (उ0प्र0),
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास,
हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग

डॉ0 प्रमोद कुमार सिंह,
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास,
विश्वविद्यालय,लखनऊ (उ0प्र0)

शोध सारांश

साहित्य और समाज एक दूसरे से अतः सम्बद्ध होते है। समाज में जो कुछ घटित होता है, साहित्य उससे अछूता नहीं रहता। साहित्य का मुख्य श्रोत समाज ही होता है तथा साथ ही साहित्य के माध्यम से एक साहित्यकार समाज को एक नयी सोच और दिशा प्रदान करता है। जिससे समाज में व्याप्त विसंगतियों को लेखक जहाँ अपने साहित्य में व्यंग्य के माध्यम से उजागर करता है। वही इन सामाजिक विसंगतियों पर करारी चोट करता है। जिसमें सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि प्रमुख है। आज राजनीति सिर्फ देश सेवा के लिये नहीं रह गयी है, बल्कि इसमें कुछ लोग व्यवसायिक अवसर तलासते हुए मिलते है। एक सजग व्यंग्यकार जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करने वाली राजनीति में फैले इन छल–छद्म और अन्तर्विरोधों को न केवल व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति देता है, बल्कि उसके विरुद्ध आक्रोश और क्षोभ की प्रकट करता है।

Keywords: *श्रीलाल शुक्ल, सामाजिक, राजनीतिक, यथार्थ, व्यंग्य*

श्रीलाल शुक्ल एक अत्यन्त संवेदनशील, विवेकशील प्रखर चिन्तक एवं व्यंग्य सम्राट हैं। हिन्दी साहित्य में वे एक लोकप्रिय, सम्मानीय, बहुचर्चित एवं प्रतिष्ठित उपन्यासकार के रूप में जाने जाते है। उनके लेखनी ने हिन्दी उपन्यास विधा को एक नया मोड़ दिया है। उपन्यासों में व्यंग्य प्रवाह उनका मौलिक नूतन प्रयोग है। उनकी रचनाओं में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि का समावेश हुआ है। जिसमें व्यंग्य उनके हर उपन्यास के तत्वों एवं स्थितियों को प्राण वायु प्रदान करता है। व्यंग्य प्रधानता एवं औपान्यासिक लोकप्रियता के कारण उनका लोकप्रिय उपन्यास 'रंगदरबारी' 'जिसका राग तो उस लोकतंत्रीय दरबार का है, जिसमें भारत की आजादी के बाद लोग आहत कुठित निराशा एवं अपंग की तरह डाल दिये गये है।''[1]

श्रीलाल शुक्ल जी ने आजादी के बाद के बदलते समाज को बड़ी ही बारीकी से देखा परखा है। इसीलिए सामाजिक जीवन को उसकी समग्रता में चित्रित किया है। समाज में व्याप्त विसंगतियाँ उन्हें निरन्तर उद्वेलित करती रही है। उनका समग्र साहित्य इसका गवाह है। उनकी रचनाओं में ग्रामीण समाज की बेचारगी, दहेज प्रथा, वेश्याओं की बहुलता, न्यायालयों का आडम्बरपूर्ण न्याय, अपराधियों को पुलिस संरक्षण, नारी जीवन की विभिन्न विडम्बनाओं के साथ–साथ युवा वर्ग से जुड़ी विसंगतियों पर इन्होंने अपनी व्यंग्यात्मक दृष्टि के साथ कलम चलाई है। इन्होंने 'अज्ञातवास' उपन्यास में विश्वविद्यालय में संस्कृत के प्रोफेसर 'विनायक' मनुष्य के अनैतिक, दुराचारी व्यवहार पर व्यंग्य कसते हुए कहते हैं। ''इधर हम लोगों के में हाल हैं, कि वेश्याओं का तिरस्कार करते है। उन्हें

पुरानी संस्कृति का कलंक मानते हैं। उनसे सम्बन्ध रखने को दुराचार समझने लगे हैं। अपने सुख के लिए, या पैसे बचाने के लालच में पर–स्त्री पर कुदृष्टि डालना उचित है?[2]

श्रीलाल शुक्ल ने रागदरबारी में शोषक पात्र जैसे वैद्यजी और उनके दरबारी सदस्य के रूप में शोषित पात्र जैसे खन्ना मालवीय और उनके सहयोगी रूप से लंगड़ जैसे पात्र तथा वे पात्र जो शोषितों के प्रति सहानुभूति तो जरूर रखते हैं, किन्तु समझौतावादी, अकर्मण्य और पलायनवादी है जैसे गयादीन, रंगनाथ आदि के माध्यम से चरित्र सृष्टि की है। 'रागदरबारी' उपन्यास में श्रीलाल शुक्ल ने 'शिवपालगंज' नामक एक गाँव का चित्रण किया है। जिसमें ''शिवपालगंज भी दिल्ली की तरह सत्ताधारियों की राजधानी है। इसका अपना मंत्रिमण्डल है, उच्चतम न्यायालय है, और अपने ही मंत्री तथा न्यायाधीश भी है। ऐसा लगता है मानों दिल्ली एवं शिवपालगंज में दो समान्तर केन्द्रिय सरकारें शासन चला रही है।''[3]

प्रत्येक कालखण्ड में स्वस्थ दिशा का दायित्व बुद्धिजीवियों पर होता है। इनके विचारों का प्रभाव व्यापक रूप से समाज पर परिलक्षित होता है। इसके अलावा पूँजीपति वर्ग जो कि वर्ग व्यवस्था के आधार पर हमारे समाज में शीर्ष पर प्रतिष्ठित होते है, और जो भौतिक समृद्धि की दृष्टि से महत्वपूर्ण होते है। यह वर्ग अपने धन और बल के सहारे, गरीब और पिछड़ों पर शासन करने की हर सम्भव प्रयास करता है। और उपर से समाज सेवक बनने का दिखावा करता है, और वह ऐसा भ्रम फैलाता है कि समाज सेवा करता है लेकिन वह निस्वार्थ सेवा का लबादा ओढ़कर स्वयं अपनी सेवा करता है। और इन्हीं के वरदहस्त के नीचे कुछ अपराधी वर्ग भी सक्रिय होते है जो या तो व्यक्तिगत हित के लिए या फिर इन्हीं के स्वार्थों और उद्देश्यों की पूर्ति के लिए तमाम तरह के अवैध तरीकों से अपने काम को अंजाम देते हैं। रागदरबारी के एक प्रसंग में देखा जा सकता है कि अध्यापकों में दिन–रात चापलूसी की भावना रहती है। शोध, योजनाओं की आड़ में विदेश यात्रा करने का प्रलोभन और स्वयं को बुद्धिजीवी कहलाने का आकर्षण प्रबल रहता है। इन बातों पर व्यंग्य कसते हुए प्रिंसिपल, शोध कार्य करने वाले रंगनाथ से कहते हैं। ''युनिवर्सिटी में लेक्चर न होने का भी कोई गम नहीं है। वहाँ तो और भी नरक है। पूरा कुम्भीपाक। दिन–रात चापलूसी। कोई सरकारी बोर्ड दस रूपल्ली की ग्रांट दे देता है, और फिर कान पकड़कर जैसे चाहे वैसी थीसिस लिखा देता है। कहते हैं कि रिसर्च कर रहे है। पर रिसर्च क्या जिसका खाते हैं उसी की गांते हैं। और कहलाते है बुद्धिजीवी। तो हालात यह है कि बुद्धिजीवी को बिलायत का चक्कर लगाने के लिए यह साबित कर देंगे। चौराहे पर दस जूते मार लो पर एक बार अमेरिका भेज दो। ये है बुद्धिजीवी''[4]

श्रीलाल शुक्ल जी ने वर्तमान राजनीति के भ्रष्ट चरित्र को उजागर करते हुए उसमें व्याप्त भ्रष्टाचार, सत्ता, लोलुपता, गुटबाजी, भाई–भतीजावाद, चाटुकारिता आदि उन तमाम विसंगतियों का उल्लेख किया है, जिन विकृतियों के कारण उनका समाज का स्वरूप निरन्तर विकृत होता जा रहा है। रागदरबारी में सनीचर जैसे नेताओं की उम्र को लेकर व्यंग्य करते हुए कहते हैं।–''भैया लठैती का काम कोई असेम्बली का काम तो है नहीं। असेम्बली में जितने ही बूढ़े होते जाओं, जितनी अक्ल सठियाती जाये उतनी ही तरक्की होती है। यह हरनाम सिंह को देखों चलने को उठते है तो लगता है गिरकर मर जायेंगे। पर दिन पर दिन वहीं उनकी पूछ बढ़ रही है। यहीं लठैती में कल्ले के जोर की बात है। जब तक चले तब तक चले। जब नहीं चले तब हलाल हो गये।''[5]

शुक्ल जी प्रजातंत्र की वर्तमान स्थिति को लेकर अपनी रचनाओं में काफी चिन्तित और दुखी दिखाई देते है। उनकी निराशा और विसंगतियों के प्रति आक्रोश साफ दिखाई देता है। उन्होंने इसके लिए व्यंग्योक्तियों एवं प्रतीकों भरपूर प्रयोग किया है 'व्यंग्य यात्रा' नामक पत्रिका में निर्मला जैन ने रागदरबारी के बारे में लिखती है। ''आज के शिवपालगंज को अगर देखना हो तो सायद शहर से दूर दराज के किसी ऐसे शिवपालगंज को अगर देखना हो तो सायद शहर से दूर दराज के किसी ऐसे शिवपालगंज की टोह लगानी होगी जहाँ आज भी सब जैसे का तैसा है। जहाँ आज भी वैद्य जी, प्रिंसपल साहब, रूप्पन बाबू, खन्ना मास्टर, बद्री पहलवान, छोटे पहलवान, शनीचर लगड, रंगनाथ कमोवेश वैसा ही कुछ करते धरते मिल जायेंगे। जैसे रागदरबारी के शिवपालगंज कस्बे में न हाल में कोई बेहतरी होगी न करतब में जिन्दगी जैसे ठहर गयी हो या घिसट रही हो।''[6]

भारत में गंदी राजनीति के कारण सत्ता और पूँजी का सबसे आसान शिकार बना है ग्रामीण समाज। स्वतंत्रता की बीच जस–की–तस बनी रही आजादी से पहले लूटने वालों की शक्ल और नाम दूसरा था बाद में उसका स्वरूप बदल गया। शुक्ल जी ने'आदमी का जहर' में नेता लोग चुनाव के समय अच्छा बनने का दिखावा करते है। जिससे कि किसी ऐसे काम का परिणाम चुनाव परिणामों पर न पड़ जाए। जब वे चुनाव जीत है तो वे अपने वास्तविक रूप में आ जाते है–''मैने उसे पैराडाइज होटल के 'बार' में बुलाया था, पर उसने कहा कि आजकल चुनाव के दिन है। इन दिनों में मै अपने होटलों में शराब नहीं पी रहा हूँ। उसे डर है कि वहाँ कोई ऊलजलूल हालत में उसका फोटो लेकर अखबारों में छपा दें''[7]

श्रीलाल शुक्ल ने समाज और राजनीति के विविध स्तर पर मौजूद व्यवस्था के आमानवीय, भ्रष्ट, क्रूर तथा विगलित चरित्र का पर्दाफास करके उस प्रहार करने का प्रयास किया है। वास्तव में रागदरबारी उपन्यास गाँव की जिन्दगी का दस्तावेज है सामाजिक राजनीतिक दुराचारों और यथार्थ के अन्तर्विरोधी पक्षों के वर्णन में तीक्ष्ण संवेदना और व्यंग्यात्मकता की पैनी धार को प्रौढ़ रूप से विकसित करने की विशिष्टता रागदरबारी की अपनी मौलिकता है। रागदरबारी का नेता वैद्यजी, जो इसलिए बेचैन हो जाते है कि उन्होंने पिछले अड़तालिस घण्टे से बोला ही नहीं, वैसे ही उन्होंने सोचा, ऐः मैं इतनी देर बिना लेक्चर दिये ही रह लिया। मेरे मन में इतने–इतने ऊँचे विचार उठे पर मैं स्वार्थी की तरह अपने आपमें उन्हें समेटे रहा। हाय! मैं कितना कंजूस हूँ। धिक्कार है मुझे जो इस देश में पैदा होकर भी इतनी देर तक मुँह बन्द किये रहा।''[8]

'रागदरबारी' उपन्यास में बैद्य जी एकमात्र सबसे अधिक शक्तिशाली पात्र है। ऐसे ही अवसरवादी नेता आज मौजूद है, जो पराधीन भारत में अंग्रेजों के पिट्ठू एवं भक्त थे। आज स्वाधीन भारत में, प्रजातंत्र में, प्रशासन में अनेक अधिकारी जमघट जमाए हुए हैं जो अपने को मैकाले का मानस पुत्र मानकर अंग्रेजों के अंग्रेजी को लेकर उनके भक्त बने हुए थे। इसी भक्ति का परिणाम है कि शिवपालगंज गाँव का एक छात्र नेता बना हुआ है।

श्री लाल शुक्ल ने जीवन के सभी पक्षों को अपने सृजन में स्थान दिया। इन सबका प्रभाव शुक्ल जी रचनाओं में दृष्टिगत होता है। इसके कारण लेखक के भीतर साहित्यिक प्रतिबद्धता दिखाई देतीं है जो डिगने वाली नहीं है। ये अपनी समय समाज में जकड़े हुए अन्यायों, अत्याचारों, शोषण और कुरीतियों पर प्रत्यक्ष रूप से नजर रखते हैं और वे अपने साहित्य के माध्यम से दिखाने, बताने तथा उसका मर्म समझाने का भरसक प्रयास किये है और अपने पाठकों के बीच मार्गदर्शक का कार्य करते है।

निश्चित ही शुक्ल का झुकाव शोषण के खिलाफ रहा है। जिसमें सर्वहारा वर्ग आता है। ये सत्ता, पूँजीपति और भ्रष्ट अधिकारियों के विरूद्ध खड़े होते हैं तभी आम जनमानस से जुड़े पाते है। ये अप्रत्यक्ष रूप से अपने पात्रों के माध्यम से इन विसंगतियों के खिलाफ नजर आते है। इनके पात्रों को समाज में परिस्थितियों के अनुसार करना पड़ता है। यहाँ तक कि उन्हें अपनी इज्जत से समझौता करना पड़ता है। उनके बच्चे बिना इलाज के अपना दम तोड़ देते है। शुक्ल जी का सम्बन्ध समाज के ग्रामीण, मजदूर, श्रमिक, दलित एवं शोषितों के लिये स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होता है। वे पहली प्राथमिकता आम आदमी को देते है। और अपने उपन्यास रागदरबारी के माध्यम से इनको समझाने का प्रयास करते हुए कहते है। ''यह जनतंत्र का सिद्धान्त है कि हमारे नेतागण कितनी शालीनता से विरोधियों को झेल रहे है। विरोधीगढ़ अपनी बात बकते रहते है और नेतागण अपनी चाल चुपचाप चलते रहते है। कोई किसी से प्रभावित नहीं होता, यह आदर्श विरोध है आपको यही रूख अपनाना चाहिए।''[9]

लेखक की मौलिक रचनात्मक प्रतिभा का आधार फलक बहुत व्यापक एवं विस्तीर्ण है। जीवन की वास्तविकताओं से सरोकार करते हुए जिन सामाजिक विसंगतियों का सामना लेखक कर रहा है, उसका प्रभाव उसकी कृतियों में यत्र–तंत्र परिलक्षित होती है। स्वतंत्र भारत का राजनीतिक संघर्ष, नेतृत्वकर्ताओं, जनता के प्रति संवेदनशीलता आदि का चित्रण को निम्न कृतियों में भलीभांति हुआ है। शुक्ल जी ने समाज के सभी पक्षों सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक आदि सभी का अपनी रचनाओं में उल्लेख किया है तथा आज की स्थानीय राजनीति, अपराध का चित्रण अपने रचनाओं में किया है। वे समाज के प्रत्येक क्षेत्र को अपनी खुली आँखों से झांक आये थे। समाज में व्याप्त विकृतियाँ उनके अंतःस्थल को विदीर्ण करती रही, उनका समस्त साहित्य इसका गवाह है। ग्रामीण समाज की बेबसी, दहेज प्रथा, न्यायालयों का आडम्बरपूर्ण न्याय, अपराधियों का पुलिस संरक्षण, वैवाहिक विसंगतियाँ, नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं पर इन्होंने करारा प्रहार किया है। शुक्ल जी अपने सामाजिक निबन्ध 'कुत्ते के पिल्ले की नसीहत' में कटाक्ष करते लिखते है कि ''इंशानों की अपेक्षा हम कुत्तों में कुछ स्वभाविक अच्छाइयाँ है। हम सब काले, पीले, सफेद जाति के कुत्ते बिना किसी भेदभाव के आपस में रह लेते है।''[10]

शुक्ल जी ने सत्ता में फैले हुए भ्रष्टाचार और दुराचार पर व्यंग्य करते हुए 'भ्रष्टाचार बनाम दुराचार' नामक व्यंग्य निबन्ध में शुक्ल जी लिखते है कि आज के नेताओं में दुराचार और भ्रष्टाचार भयंकर पैमाने पर फैला हुआ है। कुछ लोग धन कमाने के चक्कर में दुराचार करते है। तो कुछ वास्तव में अपने चरित्र से दुराचारी होते है। जो अपनी हवस को पूरा करने के लिये किसी को भी अपना शिकार बना लेते है। उन्होंने भारतीय नेताओं में भी दुराचार के बढ़ते हुए पैमाने को उद्घाटित किया है। ऐसे नेता येन–केन प्रकारेण अपनी करनी को छिपाने का प्रयास करते है।

इस तरह वर्तमान मानव जीवन के हर क्षेत्र में विसंगतियाँ है। उसी प्रकार साहित्य का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। शुक्ल जी ने अपनी रचनाओं में शोषण का हर स्तर पर विरोध किया है। कहीं ये सामन्ती शोषण के खिलाफ है तो कहीं राजनेताओं, राजे रजवाड़े, पुलिस प्रशासन, न्याय व्यवस्था या पूँजीपतियों द्वारा किया जाने वाला शोषण का तीव्र विरोध करते हुए उनके षडयंत्रों का पर्दाफाश करते है। शुक्ल जी की रचनाएँ भी अपने समय और समाज से उपजी है और इसीलिए उनमें समकालीन समाज और उसकी परिस्थितियाँ बहुतायत से दिखाई देती है। व्यंग्य लेखन विसंगतियों, विषमताओं, विडम्बनाओं और विद्रुपताओं पर आधारित होता है। इन्हीं के बरअक्स व्यंग्य लेखन रचा जाता है। स्पष्ट है कि

शुक्ल जी ने पूँजीपति बुद्धिजीवी अपराधी वर्ग के समाज में बढ़ते वर्चस्व और उनके खोखले दावों तथा उनकी शोषणवादी प्रवृत्तियों को अपने साहित्य का विषय बनाया। तथा नेताओं के चरित्र छलकपट, पदलोलुपता, अवसरवादिता, अनैतिकता आदि सभी गुण विद्यमान है आज जो नेता भ्रष्टाचार में जितना ज्यादा डूबा है, वह उतना ही वह राजनीति का सफल खिलाड़ी बन चुका है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास रागदरबारी का राजनैतिक सन्दर्भ, सीमा मिश्रा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, संस्करण 2012 पृ0 xvi
2. अज्ञातवास, श्रीलाल शुक्ल, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, सं0 2017 पृ0सं0–38
3. श्रीलाल शुक्ल के रागदरबारी का राजनैतिक सन्दर्भ, सीमा मिश्रा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नयी दिल्ली संन् 2012 पृ0–xvi
4. रागदरबारी, श्रीलाल शुक्ल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली सन् 2017, पृ0–162
5. रागदरबारी, श्रीलाल शुक्ल, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, सं0 2017, पृ0 46
6. व्यंग्य यात्रा, सम्पादक, प्रेम जनमेजय, प्रकाशन, केन्द्रिय हिन्दी संस्थान आगरा, संस्करण, अक्टूबर–दिसम्बर, सन् 2008, पृष्ठ–21
7. आदमी का जहर, श्रीलाल शुक्ल, राजकमल पेपर वैक्स दिल्ली सं0 2017 पृ0–125
8. राग दरबारी, श्रीलाल शुक्ल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं0 2017 पृ0–215
9. श्री लाल शुक्ल, रागदरबारी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं0 2017, पृ0 32
10. मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं, श्रीलाल शुक्ल, ज्ञान भारती, नई दिल्ली सं0 1989, पृ0 6